श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

—❋—

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारक गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघ्न अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनशिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद विधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम्ब के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवे लाज ॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करे ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साध बीय देता नहीं ॥ देखत ही जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदे लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करे ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो शिरधाय ॥ ६ ॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहौ ॥ चतुरदास जनमाध ॥ १४ ॥ काल बिलाई ओखपै ॥ फिरे तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै ॥ बचे न एकौ ज्ञात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावेगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावै ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोले ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोले ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावे फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरो तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीको रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरोकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावे ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तेंती-सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावे ॥ सोवो पर लै जावे-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेबै नहिं एकूं ॥ जादिन पर ला थांवेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावे ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावे ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वाला प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांडू नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहिज़ात हैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारक गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघन अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनखिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद विधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिवट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवे लाज ॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साध बीच देता नहीं ॥ देखत हो जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर से दै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो गिरधाय ॥ ९ ॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पतो ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहो ॥ चतुरदास जनमाध ॥ १४ ॥ काल बिलाई झोंपै ॥ फिरे तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै ॥ बचे न एको जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावैगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावै ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोले ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावे फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरी तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मत मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरीकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावे ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तेंतो-सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावे ॥ सोबो पर ले जावे-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेबै नहिं एकूं ॥ जादिन पर ला थांवेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावै ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावे ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांडू नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहिजात हैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारक गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघन अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनशिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद विधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके ॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयकै ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम्ब के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवै लाज ॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साधु बीच देता नहीं ॥ देखत ही जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कुं ॥ काल भग्यो घिरधाय ॥ ९ ॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहौ ॥ चतुरदास जनमाध ॥ १४ ॥ काल बिलाई श्रोझपै ॥ फिरे तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै ॥ बचे न एकौ जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावैगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावैगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावैगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावैगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावैगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावैगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावैगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावे ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोलै ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावै फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरो तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीको रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रीय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरीकूं जावे ॥ आवागमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावै ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तेंतीसोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजावेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावै ॥ सोवो पर लै जावैगा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेवै नहिं एकूं ॥ जादिन परला थावेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावै ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावै ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़ेगा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदागर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपाल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांड़ू नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहिजात हैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारक गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघन अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनबिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद बिधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवै लाज॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ सा-ध बोध देता नहीं ॥ देखत हो जल जाय ॥ पर तिरिया के का-रने पर घर सेदै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो शिरधाय ॥ ६ ॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचला-यके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अ-गम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहो ॥ चतुरदास जनमाध॥ १४॥ काल बिलाई ग्रोयपै ॥ फिरे तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै॥ बचे न एकौ जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावैगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावै ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोलै ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावै फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरो तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरोकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावै ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तेंती-सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावै ॥ सोवो पर लै जावे-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेबै नहिं एकूं ॥ जादिन पर ला थांवेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावै ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया प्रीतमकूं जो बिसरावै ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांडूं नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहिजात हैं॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारक गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघन अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनशिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद विधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिवट तट निकट यमुना जहां चोर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके ॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवै लाज ॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साध बीय देता नहीं ॥ देखत हो जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर से दै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो शिरधाय ॥ ६ ॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहो ॥ चतुरदास जनमाध ॥ १४ ॥ काल बिलाई शोशपै ॥ फिरे तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै ॥ बचे न एकौ जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसाआयो ॥ उससे कौन बचावैगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही त बहुर न पावै ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावैगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोले ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावै फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरो तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरीकूं जावे ॥ आवागमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावै ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहेंगे ॥ तेंतीसोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजावेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावै ॥ सोवो पर ले जावेगा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेबै नहिं एकूं ॥ जादिन पर ला थांवेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावै ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावै ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साइं ॥ पाप हमारे झाड़ेगा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदागर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपाल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांडू नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ दोहा ॥द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहि जात हैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बा रकगुरु पूजते ॥ नाशैं बिघ्न अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरूसलेमाबाद के मेरे प्राण अधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनखिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्रीगोपालजी ॥ २ ॥ मधुपुरी क्षणमाहिंलूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद बिधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ बंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावैं श्रीगोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं । सो ध्रुवलोक सिधाय ॥ आवा गमन मिटायके । रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतुर दास सौदाकरो ॥ लहौ गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितसे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांड़के ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवे लाज ॥५॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करे ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साधवीय देता नहीं ॥ देखतही जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटाकरे उपाय ॥ मन मूरख भज नामकूं ॥ काल भग्यो शिरधाय ॥ ६ ॥ आदि सनातन धर्मकूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थ चलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हरनाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को धनदान ॥ सेवै कं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णुसा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिलैं घन श्याम ॥ १३ ॥ श्रीपति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगलनाम रटतेरहौ ॥ चतुरदास जनसाध ॥१४॥ काल बिलाई शीशपै ॥ फिरे तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरे॥ बचे न एकौ जात॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एकसौदागरऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावेगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावैगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन संग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भंडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृतकर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक ० ॥ धन यौबन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावे ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोले ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोलै ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नामकूं जो बिसरावे फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरी तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीको रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोइ नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी वोढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिल जावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा ॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधा नाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के मरम नहींहै ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कुं ॥ चुग चुगके लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन राम पुरीकूं जावे ॥ आवागमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावे ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्य चन्द्र तारा नहिं रहैंगे ॥ तेतो सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर को लगी पसारी ॥ सौदागर लेजावेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धारणी में एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावे ॥ सोऊ पर लै जावेगा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेवै नहिं एकूं ॥ जादिन परला थावेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावे ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावे ॥ जीती बाजो हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़ेगा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदागर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपाल ॥ १ वैष्णव आदि अखंड हैं ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिन्ता तजौ ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारी जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ सर्व चेम कूं त्याग के ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखो बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुर दास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांडू नाहिं गोपाल ॥ और सर्वकूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इति श्री भरत खंडे जम्बूद्वीपे अवन्ती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंचषष्ट अरु सात ॥ आठौं ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहि जातहैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तक को पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

2354

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारकगुरु पूजते ॥ नाशैं बिघ्न अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरूसलेमाबाद के मेरे प्राण अधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनशिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्रीगोपालजी ॥ २ ॥ मधुपुरी क्षणमाहिंलूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद बिधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ बंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्रीगोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं । सो ध्रुवलोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके । रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतुर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद-

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितसे सुनो सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांड़के ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवै लाज ॥५॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साधवीय देता नहीं ॥ देखतही जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेदै छाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटाकरे उपाय ॥ मन मूरख भज नामकूं ॥ काल भग्यो शिरधाय ॥ ९ ॥ आदि सनातन धर्मकूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थ चलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हरनाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को चनदान ॥ सेवै कं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णुला नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिलैं घन श्याम ॥ १३ ॥ श्रीपति नारायण भजो ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगलनाम रटतेरहो ॥ चतुरदास जनमाध ॥१४॥ काल बिलाई श्रीयपै ॥ फिरेतिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरे ॥ बचे न एकौ जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एकसौदागरऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावैगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावैगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन संग नरक सिधावैगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भंडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृतकर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक ० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावे ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोले ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नामकूं जो बिसरावे फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरी तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीको रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोइ नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ शोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी थोढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिल जावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा ॥ रोय पीट विसरावेगा ॥ राधा नाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहींहै ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कुं ॥ चुग चुगके लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन राम पुरीकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावे ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्य चन्द्र तारा नहिं रहेंगे ॥ तेतो सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धारणी में एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावे ॥ सोऊ पर लै जावे-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेवै नहिं एकूं ॥ जादिन परला थांवेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावे ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावे ॥ जीतीबाजो हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े-गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ बैष्णव आदि अखंड हैं ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिन्ता तजौ ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारी जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ सर्व चेम कूं त्याग के ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखो बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुर दास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांडू नाहिं गोपाल ॥ और सर्वकूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इति श्री भरत खंडे जम्बूद्वीपे अवन्ती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंचषष्ठ अरु सात ॥ आठौं ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥१॥ नौकेनौ रहि जातहैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तक को पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारकगुरु पूजते ॥ नाशैं बिघ्न अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरूसलेमाबाद के मेरे प्राण अधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनशिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्रीगोपालजी ॥ २ ॥ मधुपुरी क्षणमाहिंलूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद बिधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥५॥ बंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्रीगोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटें । सो ध्रुवलोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके । रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतुर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितसे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांड़के ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवे लाज ॥५॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साधबीय देता नहीं ॥ देखतही जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटाकरे उपाय ॥ मन मूरख भज नामकूं ॥ काल भग्यो थिरधाय ॥ ६ ॥ आदि सनातन धर्मकूं ॥ दीनोंहि छिटकाय ॥ आया पन्थ चलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हरनाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को धनदान ॥ सेवै कं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधत नहीं ॥ नहीं विष्णुसा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिलैं घन श्याम ॥ १३ ॥ श्रीपति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगलनाम रटतेरहौ ॥ चतुरदास जनमाध ॥१४॥ काल बिलाई धीरपै ॥ फिरेतिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै ॥ बचे न एकौ जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एकसौदागरऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावैगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावैगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन संग नरक सिधावैगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भंडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृतकर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावैगा ॥ २ ॥ एक ० ॥ धन यौबन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावे ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोले ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नामकूं जो बिसरावे फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरी तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोइ नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ शोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी वोढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिल जावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा ॥ रोय पीट विसरावेगा ॥ राधा नाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहींहै ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कुं ॥ चुग चुगके लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन राम पुरीकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावे ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्य चन्द्र तारा नहिं रहैंगे ॥ तंतो सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धारणी में एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावे ॥ सोऊ पर लै जावे-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेवै नहिं एकूं ॥ जादिन परला थांवेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावे ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ त्रिया पीतमकूं जो बिसरावे ॥ जीतो बाजो हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े-गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ बैष्णव आदि अखंड हैं ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिन्ता तजौ ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारी जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ सर्व चेम कूं त्याग के ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखो बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुर दास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांडू नाहिं गोपाल ॥ और सर्वकूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इति श्री भरत खंडे जम्बूद्वीपे अवन्ती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंचषष्ठ अरु सात ॥ आठौं ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥१॥ नौकेनौ रहि जातहैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तक को पण्डित कृष्णविहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारक गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघ्न अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनबिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद बिधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितदे सुनो सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवे लाज॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साध बोय देता नहीं ॥ देखत ही जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो गिरधाय ॥ ९ ॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजो ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहो ॥ चतुरदास जनमाध ॥ १४ ॥ काल बिलाई घोगपै ॥ फिरे तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै ॥ बचे न एको जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावेगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावै ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोले ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोलै ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावै फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरी तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरीकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावै ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तेंतो-सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावै ॥ सोवो पर ले जावे-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेबे नहिं एकूं ॥ जादिन पर ला थांवेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावै ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावै ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके॥ भजलेना सतनंद॥ गुरू सलेमा बाद के॥ छोड़ भजे सो जंद॥ ४॥ लाखों बातन त्यागिये॥ पूरण राधा श्याम॥ चतुरदास श्वासा प्रति॥ भजियो सीता राम॥ ५॥ निम्बारक ना छांड़िहूं॥ छांडू नाहिं गोपाल॥ और सर्व कूं छांड़के॥ सुनौं चतुर के हाल॥ ६॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम्॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु॥ दोहा॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात॥ आठों ते पुनि नौगुणे॥ नौकेनौ रहिजात॥ १॥ नौकेनौ रहिजात हैं॥ तुलसी कियो विचार॥ रम्यो राम यूं जगत में॥ नहीं द्वैत निस्तार॥ २॥

सम्पूर्णम्॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारक गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघन अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनशिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद बिधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुवेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहौ गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयकै ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवै लाज ॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साध बोध देता नहीं ॥ देखत ही जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदे लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो भिरधाय ॥ ९ ॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहौ ॥ चतुरदास जनमाध ॥ १४ ॥ काल बिलाई ओझपे ॥ फिर तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै ॥ बचे न एकौ जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावेगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावै ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोलै ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावै फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरो तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ शोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरीकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावै ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तैंती-सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावै ॥ सोवी पर लै जावै-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेवै नहिं एकूं ॥ जादिन पर ला थावेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावै ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावै ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांड़ू नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहि जात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहि जात हैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बार्क गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघन अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनविधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद बिधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ बंशिवट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावैं श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके ॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवै लाज॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साध वीय देता नहीं ॥ देखत ही जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो घिरधाय ॥ ९॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहौ ॥ चतुरदास जनमाध॥ १४॥ काल बिलाई ओयपै ॥ फिरे तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै॥ बचे न एकौ जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसाआयो॥ उससे कौन बचावैगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा॥ यहां के यहां रहि जावेगा॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही त बहुर न पावै ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोलै ॥ यम घर कीड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावै फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरो तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ शोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरीकूं जावे ॥ आवागमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावै ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तेंतीसोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजावेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावै ॥ सोवो पर लै जावेगा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेबै नहिं एकूं ॥ जादिन परला थांवेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावै ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावै ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़ेगा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदागर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपाल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांडूं नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षट् अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहिजात हैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

—※—

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारक गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघ्न अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनमिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद त्रिधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावैं श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहौ गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयकै ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम्ब के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवै लाज॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साध बीच देता नहीं॥ देखत हो जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो थिरधाय॥ ६॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा बो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहौ ॥ चतुरदास जनमाध॥ १४॥ काल बिलाई ओमपै ॥ फिरै तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै॥ बचे न एकौ जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसा आयो॥ उससे कौन बचावैगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावै ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोलै ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावै फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरी तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरीकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावै ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तेंती-सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावै ॥ सोवो पर ले जावे-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेबै नहिं एकूं ॥ जादिन पर ला थांवेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावै ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावै ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांडू नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहिजात हैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बार्क गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघ्न अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनधिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद बिधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटे सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा काली धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम्ब के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवै लाज ॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साधु वीय देता नहीं ॥ देखत ही जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो शिरधाय ॥ ९ ॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहौ ॥ चतुरदास जनमाध ॥ १४ ॥ काल बिलाई झोमपै ॥ फिरै तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै ॥ बचे न एको जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावेगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावै ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोले ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावे फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरी तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरीकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावे ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तैंती-सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावे ॥ सोवो पर लै जावे-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेबे नहिं एकूं ॥ जादिन पर ला थांवेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावे ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावे ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज ॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांड़ू नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहिजात हैं॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम ॥

दूसरीबार

स्थान लखमऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारक गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघन अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनबिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटी संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद त्रिधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुवेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावैं श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम्ब के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवे लाज ॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साध बीच देता नहीं ॥ देखत ही जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदै लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो गिरधाय ॥ ६ ॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधत नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहौ ॥ चतुरदास जनमाध ॥ १४ ॥ काल बिलाई शीशपै ॥ फिरे तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै ॥ बचे न एकौ जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसाआयो ॥ उससे कौन बचावेगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिको सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावे ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोले ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावे फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरी तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ९ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरीकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावे ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तेंतो-सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावे ॥ सोवो पर ले जावे-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेवे नहिं एकूं ॥ जादिन पर ला थावेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावे ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया प्रीतमकूं जो बिसरावे ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारो जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागो

दिलको रंज॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांड़ू नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात॥ १ ॥ नौकेनौ रहिजात हैं॥ तुलसी कियो विचार॥ रम्यो राम यूं जगत में॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

श्रीराधासर्वेश्वरायनमः

अथसौदागरलीला

लिख्यते ॥

श्रीमतेनिम्बार्कायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधासर्वेश्वर पारब्रह्म कर्तार ॥ सो मेरे परमेश्वर ॥ महा कालके कार ॥ १ ॥ निम्बारक गुरु पूजते ॥ नाशैं बिघ्न अनेक ॥ नमो नमो सब साध कूं धरि उपासना टेक ॥ २ ॥ गुरू सलेमाबाद के मेरे प्राणअधार ॥ चतुरदास अर्जी करैं सुनियो सिरजन हार ॥ ३ ॥ अष्टक ॥ वृन्दावन ध्रुवलोक कहिये निकट यमुना गंग हैं ॥ नंदनंदनजगत बन्दन श्रीगोपालजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ राधारमण बिहार सुन्दर बनशिधर सतनन्द हैं ॥ रसिक जनके प्राणदाता श्री गोपालजी ॥ २ ॥ मधपुरी क्षणमाहिं लूटो संग श्रीबलरामजी हैं ॥ कुब्जा मान बढ़ाय कर श्री गोपालजी ॥ ३ ॥ सोले कला युग चार प्रकट प्रभु पूरण दीन दयाल जी हैं ॥ आदि अन्त समीप यहि श्री गोपालजी ॥ ४ ॥ चेत न होय चित चेत खोजो वेद विधिकर रटतहैं ॥ कुंजबनहिं बिहार लीला श्रीगोपालजी ॥ ५ ॥ वंशिबट तट निकट यमुना जहां चीर हरण श्री गोपालजी हैं ॥ भक्त कारण गिरि उठायो श्री गोपालजी ॥ ६ ॥ सांवरि सूरति माधुरी मूरति अहि नथन प्रभु नँदलाल जी हैं ॥ ब्रह्म शेष महेश सखियां श्रीगोपालजी ॥ ७ ॥ इन्द्र चन्द्र कुवेर नारद भारती महिमा कहैं ॥ चतुर जन नित नाम गावें श्री गोपालजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जो जन अष्टक कूं रटैं सो ध्रुव लोक सिधाय ॥ आवागमन मिटायके ॥ रहे मुक्ति को पाय ॥ १ ॥ भई पसारी जगत की ॥ सौदागर श्रीराम ॥ चतर दास सौदाकरो ॥ लहो गोबिंद

का नाम ॥ २ ॥ और कहूं उत्तम कथा ॥ चितदे सुनौ सुजान ॥ हंस सुनो तोसें कहूं ॥ सौदागरी दुकान ॥ ३ ॥ मृत्यु लोक में आयके ॥ हंसा करे बेपार ॥ युगल नाम कूं छांडके ॥ डूबा कारी धार ॥ ४ ॥ मात पिता अरु भामिनी ॥ और कुटुम के काज ॥ खोटा सौदा करत हैं ॥ तोहिं न आवै लाज ॥ ५ ॥ तेरा मेरा करतही ॥ उम्मर बीती जाय ॥ कौल बचन बिसरायके ॥ रह्यो जगत में छाय ॥ ६ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ करे कमाई झूंठ ॥ किया पसारा जगत में ॥ बांधे अपना खूंट ॥ ७ ॥ साध बीय देता नहीं ॥ देखत हो जल जाय ॥ पर तिरिया के कारने पर घर सेंदे लाय ॥ ८ ॥ नेक कमाई ना करै ॥ खोटा करे अपाय ॥ मन मूरख भज नाम कूं ॥ काल भग्यो घिरधाय ॥ ९ ॥ आदि सनातन धर्म कूं ॥ दीनोंहै छिटकाय ॥ आया पन्थचलायके ॥ जगत में गोता खाय ॥ १० ॥ सौदाकर हर नाम का ॥ पाया उत्तम देह ॥ यह अवसर नहिं पाइया ॥ करियो परम सनेह ॥ ११ ॥ गावै को माया पती ॥ देवै को अनदान ॥ सेवै कूं निम्बार्क गुरु ॥ ये सौदा परमान ॥ १२ ॥ परमारथ साधन नहीं ॥ नहीं विष्णु सा नाम ॥ सुकरत सौदा वो करे ॥ ताहि मिले घन श्याम ॥ १३ ॥ श्री पति नारायण भजौ ॥ सौदा अगम अगाध ॥ युगल नाम रटतेरहौ ॥ चतुरदास जनमाध ॥ १४ ॥ काल बिलाई ओगपे ॥ फिरे तिहारे साथ ॥ सौदागर सौदाकरै ॥ बचे न एको जात ॥ १५ ॥ प्रभाती ॥ एक सौदागर ऐसा आयो ॥ उससे कौन बचावैगा ॥ टेक ॥ सुकरत करले नाम सुमरले ॥ आगे दुख नहिं पावेगा ॥ मात पिता सब झूंठे छैया ॥ इन सँग नरक सिधावेगा ॥ १ ॥ एक० ॥ हीरा मोती भरे भँडारा ॥ यहां के यहां रहि जावेगा ॥ दान पुण्य सुकृत कर हंसा ॥ आगू मौज उड़ावेगा ॥ २ ॥ एक० ॥ धन यौवन तनरे वे नाहीं ॥ लाख यतन कर जावेगा ॥ गिरिधर हरिकी सेवा करले ॥ नहिं आगे पछतावेगा ॥ ३ ॥ एक० ॥ नर देही तू बहुर न पावै ॥ यम घर जाय दुख पावेगा ॥ अन्य देवकूं पूजत डोलै ॥ भजन

बिना पछतावेगा ॥ ४ ॥ एक० ॥ झूंठा धंधा करता डोले ॥ यम घर कोड़ा पावेगा ॥ श्याम नाम कूं जो बिसरावै फिर फिर गोता खावेगा ॥ ५ ॥ एक० ॥ भामा तेरी तू मत जाने ॥ मरे और सँग जावेगा ॥ जीते जीकी रहे सगाई ॥ अन्त संग नहिं आवेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ पकड़ बांध यम तोकूं टांगे ॥ तबकोई नहीं छुड़ावेगा ॥ समझ सोच मन मूरख हंसा ॥ अन्त समय पछितावेगा ॥ ७ ॥ एक० ॥ मिट्टी ओढ़न मिट्टी बिछावन ॥ मिट्टी में मिलजावेगा ॥ काल फ़ौज तेरे कूं लूटे ॥ जहां हरि याद तुझे आवेगा ॥ ८ ॥ एक० ॥ झूठ ख्याल जगत का हंसा॥ रोय पीट बिसरावेगा ॥ राधानाथ मनावे सुगुरा ॥ सो जनदुख नहिं पावेगा ॥ ६ ॥ एक० ॥ सौदागर के शरम नहीं है ॥ हंसा मार खुटावेगा ॥ राजा परजा चार वर्ण कूं ॥ चुग चुग के लेइ जावेगा ॥ १० ॥ एक० ॥ सो जन रामपुरीकूं जावे ॥ आवा-गमन मिटावेगा ॥ राम श्याम कूं जो बिसरावै ॥ वो नर नरक सिधावेगा ॥ ११ ॥ एक० ॥ सूर्यचंद्रतारा नहिं रहैंगे ॥ तेंती-सोहि ठगावेगा ॥ सौदागर की लगी पसारी ॥ सौदागर लेजा-वेगा ॥ १२ ॥ एक० ॥ जेते दृष्टि पड़े धरणी में ॥ एक रहन नहिं पावेगा ॥ सात द्वीप नव खंड बतावै ॥ सोवो पर लै जावै-गा ॥ १३ ॥ एक० ॥ भला बुरा रेबै नहिं एकूं ॥ जादिन पर ला थावेगा ॥ जहां की वस्तु जहां समावै ॥ यक श्री पति रह जावेगा ॥ १४ ॥ एक० ॥ प्रिया पीतमकूं जो बिसरावै ॥ जीती बाजी हारेगा ॥ वोही सौदागर मेरो साईं ॥ पाप हमारे झाड़े गा ॥ १५ ॥ एक० ॥ कहां लग कहूं अन्त नहिं पाऊं ॥ सौदा-गर निस्तारेगा ॥ चतुर दास चरणों को चाकर ॥ सौदागरहि सम्हारेगा ॥ १६ ॥ एक० ॥ दोहा ॥ सौदागर सिरदार है ॥ काल रूप कूं काल ॥ साध रूप कूं सांवरो ॥ आप बने गोपा-ल ॥ १ ॥ वैष्णव आदि अखंड है ॥ पाखंडी कलिकाल ॥ चतुर दास चिंता तजो ॥ मानत रहे गोपाल ॥ २ ॥ बनी पसारे जगत की ॥ सौदा करो समंज ॥ राधा नाथ मनायके ॥ त्यागे

दिलको रंज ॥ ३ ॥ सर्व चेमकूं त्यागके ॥ भजलेना सतनंद ॥ गुरू सलेमा बाद के ॥ छोड़ भजे सो जंद ॥ ४ ॥ लाखों बातन त्यागिये ॥ पूरण राधा श्याम ॥ चतुरदास श्वासा प्रति ॥ भजियो सीता राम ॥ ५ ॥ निम्बारक ना छांड़िहूं ॥ छांडू नाहिं गोपाल ॥ और सर्व कूं छांड़के ॥ सुनौं चतुर के हाल ॥ ६ ॥ इतिश्री भरत खण्डे जम्बूद्वीपे अवंती में रत्न पुरी मध्ये वैष्णव चतुर दास विरचित सौदागर लीला सम्पूर्णम् ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ दोहा ॥ द्विगुने तिगुने चौगुने पंच षष्ट अरु सात ॥ आठों ते पुनि नौगुणे ॥ नौकेनौ रहिजात ॥ १ ॥ नौकेनौ रहिजात हैं ॥ तुलसी कियो विचार ॥ रम्यो राम यूं जगत में ॥ नहीं द्वैत निस्तार ॥ २ ॥

सम्पूर्णम् ॥

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
अगस्त सन् १८८६ ई०

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णबिहारी शुक्लने शुद्ध किया ॥

—— ❋ ——